हमारा बच्चा और चंडीगढ़ की पुलिस

तेजी ग्रोवर

दीपावली के दिन की यह बात है। शहर था चंडीगढ़, जिसे मैंने कभी शहर जैसा नहीं पाया – न कोई बकरियों का झुण्ड, न पत्ते खेलते लोगों की चौकड़ी, न गली में कोई जनाज़ा, न कोई बावड़ी, न कुआँ, और न ही मेरी छत पर दाना-दुनका चुगने कभी पक्षी ही आते थे। कुल बीस-बाईस बरस जो मैंने उस शहर में बिताए, ऐसा एक बार भी नहीं हुआ कि मेरी रसोई में घुसकर कभी किसी बिल्ली ने दूध पी डाला हो। हर जगह देखो तो एक जैसे घर, उनके एक से फाटक, एक से रंग। पेड़ों की ओर देखो तो ऐसे बहुत कम पेड़ होंगे जो पक्षियों के दोस्त हों। और तो और, जिन जनाब ने शहरों के पेड़-पौधों का प्लान बनाया था, वे नहीं चाहते थे चंडीगढ़-वासियों को पतझड़ का कोई अनुभव हो। एक पेड़ अगर हरा-भरा है तो साथ वाला सूखा। लिहाज़ा मौसम जैसे एक पेड़ को फलांग कर अगले पेड़ पर बैठने को मजबूर हो। यह सब चंडीगढ़ के प्लान का हिस्सा था। मेरे घर का पता था - 142/सेक्टर 36 ए । तुम खुद सोचो, ऐसे किसी पते पर रहना कितना बेमज़ा होता होगा। मेरे अब के पते में नर्मदा नदी का दिव्य ज्योति घाट भी है, होशंगाबाद शहर का मुख्य डाक घर भी। इस पर मकान मालिक का नाम भी जोड़ देना होता है।

चंडीगढ़ की कल्पना की थी पण्डित नेहरू की प्रेरणा से फ्रांस के एक आर्किटेक्ट कर्बूज़ियर ने। इस शहर में दीपावली के एक दिन बिल्ली के एक बच्चे पर देखो क्या गुज़री।

उस दिन मैं घर पर अकेली थी। मैंने सोचा क्यों न मैं कपड़े इस्तरी करने वाली बिमला और उसके बच्चों से ही मिल आऊँ। उस समय वह एक खाली बन्द घर के ज़ीने के नीचे बैठी अपने बच्चों को खाना खिला रही थी।

मैं जैसे ही पालथी मारकर बच्चों के साथ बैठी कि मुझे एक बिल्ली के बच्चे की बहुत ही धीमी आवाज़ सुनाई पड़ी। मैंने पूछा, "बिमला, यह आवाज़ कहाँ से आ रही है?" वह बोली, "घर के अन्दर एक बिल्ली का बच्चा कैद है।" और पूछने पर पता चला कि छत पर बिल्ली का ठिकाना है और किसी तरह एक बच्चा ऊपर से घर के अन्दर आ गिरा है। घर पूरी तरह से खाली और बन्द था और मकान मालिक लुधियाना में रहते थे। बच्चे जब खाना खा चुके तो हम सब ने बारी-बारी से खिड़की में से झाँककर अन्दर देखने की कोशिश की। धूल से भरे हुए हॉल के बीचों-बीच वह डरा हुआ काला बच्चा खड़ा था। उसके माथे पर दो सफेद धब्बे थे। हम सब मिलकर सोचने लगे कि उसे बाहर कैसे निकाला जाए। खिड़की का काँच भीतर से बन्द था और लोहे की सलाखें भी लगी थीं। अगर किसी तरह काँच हट सकता तो दूध की कटोरी खिड़की में रखकर हम बच्चे को आसानी से बाहर निकाल सकते थे। मामला इतना आसान नहीं था। घर किसी और का था और हम पुलिस की मदद लिए बिना फँस सकते थे, ऐसा हमें लगा।

मैंने घर जाकर पास के थाने पर फोन लगाया। उस ओर से कड़क और जली-भुनी आवाज़ सुनकर मैं सहम गई। दीपावली के दिन भी ये लोग थानेमें ड्यूटी बजा रहे थे, प्यार से कैसे बोलते? बहरहाल, मैंने हिम्मत बटोरकर बताने की कोशिश की कि अगर कोई आ जाता तो उनके सामने हम

लोग खिड़की तोड़कर बच्चे को बाहर निकाल सकते हैं। पता नहीं, यह कैसे हुआ कि बातचीत के दौरान "बिल्ली का बच्चा" बच्चे में बदल चुका था। और मुझे ऐसा लगा कि थाने में इस बात को सुनकर कुछ अफरातफरी भी मच रही थी। तब भी कोई वहाँ से हिलकर हमारे पास आने को राज़ी न था। मेरे फोन लगातार थाने में घण्टियाँ बजा रहे थे, और ड्यूटी पर बैठी टुकड़ी की जगह एक और दल ने ले ली थी। मैं न जाने कितनी दफा अपनी कहानी सुना चुकी थी और इस बीच भाग-भागकर बच्चे को भी देख रही थी। दीपावली की शाम होने को आ रही थी और ऐसे में किसी का ध्यान खींचकर कोई काम निकलवाना आसान नहीं था।

काफी समय गुज़रने के बाद एक जीप आकर रुकी और आखिरकार मैं पुलिस के वाहन में बैठकर घटना स्थल पर पहुँची। आस-पड़ोस के लोग पटाखे फोड़ रहे थे और पुलिस को आया देख घबरा गए थे। जब पुलिस इंस्पेक्टर सिंह को यह बात समझ में आई कि घर के अन्दर कैद बच्चा बिल्ली का बच्चा है, तो यकीन मानो उन्हें कतई विश्वास नहीं हुआ। उन्होंने बड़ी सख्त आवाज़ में मुझसे पूछा, "आपका मतलब है कि इस घर के अन्दर बिल्ली का बच्चा है? आप तो बच्चा-बच्चा कर रही थीं?" मैं उनसे कैसे कहती कि आपका दिमाग तो ठीक है, बिल्ली का बच्चा, बच्चा ही तो है और क्या है? इंस्पेक्टर साहब ने बिमला और मुझे बड़ी बुरी तरह से डाँटा। सरकारी काम में दखल डालने का आरोप लगाकर हमें हिरासत में लेने की धमकी दी, और फिर "दीपावली के दिन दिमाग खराब कर दिया" कहकर अपने डण्डाधारी साथियों के साथ चला गया। मैंने जाते-जाते उनसे कहा, "अब हम खिड़की तोड़कर बच्चे को बाहर निकालेंगे। हम आपको बता रहे हैं, आपको जो करना हो सो करिए।" वे एक और बड़ी-सी धमकी देकर चले गए।

इस बीच बिल्कुल पास के घर में एक नव-विवाहित दम्पति इस पूरी घटना पर नज़र रखे हुए था। मैंने उनसे कहा, "देखिए लक्ष्मी जी पता नहीं किस-किस रूप में दर्शन देती हैं, क्या आप हमारी मदद करेंगे?" पत्नी तो भीतर लक्ष्मी पूजन के लिए चली गई। लेकिन वह नौजवान तुरन्त कुछ औज़ार लेकर आ गया। और फिर हम सब ने मिलकर काँच को किसी तरह खिड़की में से हटा लिया। हम लोग वहाँ से हट गए और कुछ ही देर में हमारा काला-सफेद सुन्दर-सा बिलौटा सींखचों में से निकलकर बाहर आ गया। ज़ाहिर है वह बहुत डरा हुआ था।

इस बीच बिमला की बिटिया सुखवन्ती छत पर जाकर देख आई थी कि बिल्ली सपरिवार वहाँ से निकल चुकी थी। हम लोगों ने मिलकर फैसला किया कि बच्चा रात भर मेरे पास रहेगा। मैं उसे पाल तो नहीं सकती थी क्योंकि बिल्ली की बालों से मुझे एलर्जी है और मैं भयानक रूप से बीमार हो जाती हूँ। लेकिन उन दिनों मेरी एक छात्रा ने कॉलेज की पढ़ाई के बाद पशुओं की देखभाल के लिए एक अस्पताल और आवारा पशुओं के लिए एक अच्छे-खासे शेल्टर का बन्दोबस्त कर लिया था। लिहाज़ा मैंने पायल को फोन करके पूरी कहानी बयान की। उस रात वह मेरे घर नहीं आ सकती थी, सो उसने बच्चे की देखभाल के लिए मुझे निर्देश दिए और सुबह आने का वादा किया।

मैं चाय बनाकर सुबह-सुबह पायल की प्रतीक्षा करने लगी। बच्चे ने ठीक से दो बार दूध पी लिया था, और रात-भर चैन से सोया भी रहा था।

पायल उस नन्ही-सी जान को अच्छे से लपेट-लपाट कर अपने स्कूटर से ले गई। उससे अगले ही दिन शेल्टर पर एक सात-आठ बरस की लड़की अपने मम्मी-पापा के साथ आई, और हमारे खूबसूरत बिलौटे को कार में बिठाकर ले गई।

इस घटना के कुछ ही समय बाद मैं एक अच्छे पते और एक असली जगह की तलाश में होशंगाबाद चली आई। पायल काफी समय तक हमारे लाडले के नए परिवार से मिलने जाती रही। वह बहुत अच्छा और खुशमिजाज़ किस्म का था। उन लोगों के बीच बिलौटा अभी तक बड़ी शान से खूब मौज-मस्ती करता फिर रहा है।

हाँ, जो काँच टूट गया था, उसे बदलवाकर खिड़की फिर से बन्द कर दी गई थी।